LITTERA PUBLIC SCHOOL

CLASS 8 **CHAPTER 3** **HINDI**

बस की यात्रा

बस की यात्रा के लेखक है हरिशंकर परसाई। उन्होंने इस रचना को व्यंग्यात्मक शैली में लिखा है। वे अपनी रचना में पुराने बस के मालिक पर व्यंग किया है।

उन्होंने अपनी इस रचना में कहा है कि बड़े-बड़े मालिक पुराने से पुराने बस को चलाते हैं बिना लोगों की जान की परवाह किए।

कब कहीं किसी भी जगह उनके बस का इंजन फेल हो जाता है बस रुक जाती है और सभी यात्रीगण परेशान हो जाते हैं। उन्होंने अपनी रचना में लिखा है कि अगर उस खटारा बस से कोई जाता है तो निश्चित नहीं है कि वह समय पर पहुंच जाए कभी कभी तो ऐसा होता है कि वह दूसरे दिन घर पहुंचता है। पुरानी बस ऐसे चलती है जैसे कब वह रुक जाए और उनके इंजन की ऐसी सोती है कि लगता है कब बस रुक जाएगी लेकिन उस पर बैठे हुए नियमित यात्री को पूर्ण आशा रहती है कि यह बस हमें घर पहुंच जाएगी क्योंकि वह इस यात्रा को रोज करते हैं और वह विश्वास के साथ ही बैठते हैं और 6 से 8 घंटे में अपने-अपने घर पहुंच जाते हैं।

बस की यात्रा में बैठे यात्रीगण को तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि बस किस पेड़ से टकरा जाएगी और कब बस उलट जाएगा।